17

''समझदारी से चलो''
(भाग 1)
(5:15-33)

इफिसियों के अन्तिम बड़े भाग (5:15—6:20) में प्रेरित पौलुस ने अच्छे मसीही सम्बन्ध बनाए रखने और बुराई के विरुद्ध लड़ाई में डटे रहने के लिए स्पष्ट योजनाएं बताईं। पत्र में विशेष प्रकार से ''चलने'' की चौथी और अन्तिम आज्ञा 5:15 में दी गई है।

परमेश्वर और दूसरों पर फोकस करते हुए ध्यान से रहना (5:15-21)

''अवसर को बहुमूल्य समझना'' (5:15, 16)

[15]इसलिए ध्यान से देखो कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। [16]और अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।

आयतें 15, 16. इफिसियों को उनकी चाल अर्थात जीवन के ढंग की पहली तीन ताड़नाएं अपने बुलाए जाने के ''योग्य चाल'' चलने, ''प्रेम में'' चलने और ''ज्योति की संतान'' की तरह चलने की थीं। चौथी ताड़ना थी कि **ध्यान से देखो कि कैसी चाल चलते हो**। यूनानी अवश्य माननीय अनुवादित शब्द ''देखो'' *blepete* है। पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए क्रिया रूप में ''निरन्तर या बार-बार कार्य'' शामिल है।[1] इसका अर्थ है ''मानसिक रूप से जांचना, ध्यान देना, समझना, विचार करना, चिंतन करना, ध्यान देने के अर्थ में देखना, गौर करना।''[2] ''ध्यान से'' *akribōs* का अनुवाद है और उस शब्द से जुड़ा है, जिसमें ''बड़ी पीड़ा, सम्भाल और लगन की आवश्यकता होती है'' और ''सही'' और ''स्टीक'' होता है।[3] विश्वासी के लिए परमेश्वर के वचन के ढांचे के भीतर चलने पर ध्यान देते रहना आवश्यक है। यह ताड़ना यहोशू को परमेश्वर द्वारा दी गई अवश्य माननीय आज्ञा के जैसा है, जिसमें उसने कहा था, ''इतना हो कि तुम हियाव बांधकर और बहुत दृढ़ होकर व्यवस्था ... के अनुसार करने में चौकसी करना; और उससे न तो दाहिने मुड़ना और न बायें'' (यहोशू 1:7)। समझदारी से चलने के संदर्भ में प्रेरित के निर्देशों से यीशु की बातें ध्यान में आती हैं, जिसमें उसने कहा, ''जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा, जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया'' (मत्ती 7:24)।

''ध्यान से [देखने के लिए] कि कैसी चाल चलते हो'' **निर्बुद्धियों** की मूर्खता से बचना और **अवसर को बहुमोल समझकर बुद्धिमानों** की तरह चलना है। *Exagorazō* के एक रूप यूनानी कृदंत *exagorazomenoi* का अर्थ है ''अपने लिए खरीद लेना''[4] और ''भलाई करने

के लिए हर अवसर का समझदारी और पवित्रता से किया गया इस्तेमाल, जिससे जोश और भलाई ऐसे हो जैसे यह समय को अपना बनाने के लिए खरीदने का धन हो।''[5]

अवसर को बहुमूल्य जानने के लिए दिया गया प्रोत्साहन इसलिए दिया गया है **क्योंकि दिन बुरे हैं**। पहले पौलुस ने इस तथ्य की बात की थी कि दुष्ट संसार ''आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा'' की शक्ति के वश में है, ''जो अब भी आज्ञा न मानने वालों के कार्य करता है'' (2:2)। इस संसार में हमें मसीही होने के नाते ऐसा जीवन जीना आवश्यक है, जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है। हमें भले काम करने के हर अवसर का लाभ उठाना चाहिए, ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए, जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया'' (2:10)। समय सीमित है, भलाई करने के अवसर बहुत हैं, और बुराई की भरमार है, इस कारण मसीही लोगों के लिए जब तक हो सके जो वे हैं और जो कुछ वे हैं, उसका लाभ उठाना चाहिए।

फिर पौलुस ने दिखाया कि समझदारी से चलने के लिए मसीही लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा को समझना (5:17) और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना (5:18) आवश्यक है।

''परमेश्वर की इच्छा को समझो'' (5:17)

[17]इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है?

आयत 17. इफिसुस के मसीही लोगों के लिए आवश्यक था कि **समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।** किसी व्यक्ति के लिए इस बुरे संसार में भलाई करने के लिए अपने अवसरों का लाभ उठाने के लिए आवश्यक है कि उसे पता हो कि परमेश्वर उससे क्या करवाना चाहेगा। मूर्ख होने के बजाय बुद्धिमान होने के लिए उसे परमेश्वर की शिक्षा का ज्ञान होना आवश्यक है। इस पत्र में जो कुछ पौलुस ने इफिसियों को बताया था, वह उन्हें ''प्रभु की इच्छा'' से परिचित होने लिए बताया गया था। कुलुस्से के लोगों के लिए पौलुस की प्रार्थना थी कि वे ''सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो'' जाएं (कुलुस्सियों 1:9)। इफिसियों के साथ-साथ वह कुलुस्सियों के लिए भी चाहता था कि वे परमेश्वर की सच्चाई को जाने, इसे समझें और उन्हें इसे अपने दैनिक जीवन में सही ढंग से लागू करने की समझ मिले।

आज पवित्र शास्त्र का अध्ययन करके मसीही लोगों को इस बात का पता चलता है कि प्रभु उनसे क्या उपेक्षा करता है। समझदारी से और ध्यानपूर्वक चलने के लिए वचन का ज्ञान, समझ इसे लागू करना और इसके अनुसार जीना आवश्यक रहा है।

''आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ'' (5:18-21)

[18]और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। [19]और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। [20]और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। [21]और मसीह के भय से एक-दूसरे के अधीन रहो।

फिर पौलुस ने ''आत्मा से परिपूर्ण हो जाने के लिए'' आवश्यक बातें बताईं। 5:19-21 में उसने तीन नियमों का इस्तेमाल करते हुए कुछ परिणाम दिखाए। विश्वास में बढ़ने वाले मसीही लोग गाने में परमेश्वर की स्तुति करते हैं, हर बात में उसे धन्यवाद देते हैं, और भाइचारे की प्रीति और सहयोग में एक दूसरे को समर्पित होते हैं।

आयत 18. बुद्धिमानों की तरह ध्यानपूर्वक चलने के लिए **आत्मा से परिपूर्ण** होना शामिल है। पौलुस ने **दाखरस से मतवाले न** बनने के नकारात्मक वाक्य से आरम्भ किया। मतवालापन मूर्खता की जीवनशैली से जुड़ा है न की समझदारी वाली जीवन शैली से। अन्धकार में रहने वाले लोग बेशक मतवाले हो सकते हैं, परन्तु ज्योति में रहने वाले लोग समझदार होते हैं (देखें रोमियों 13:12, 13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:6-8)। पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि मतवालेपन से **लुचपन** (*asōtia)* होता है। यूनानी शब्द का सम्बन्ध *sōizō* (''बचाना,'' ''बचाव करना,'' ''सम्भालना'' से है);[6] परन्तु नकारात्मक पूर्वसर्ग *alpha* के साथ। *Asōtia* ''व्यर्थता'' या ''बेपरवाही से छोड़ देना'' के विचार का संकेत देता है। पौलुस कह रहा था कि मतवालापन कोई खूबी नहीं है, बल्कि केवल ''भ्रष्ट, चरित्रहीन,''[7] बेकाबू, बेकार जीवन है। व्यक्ति उसी के काबू में होता है जो सबसे पहले उसके मन में आता है। यदि उसका ध्यान शराब पीने पर है तो उसका जीवन ऐसा है, जिसे बचाया नहीं जा सकता। इसके विपरीत जो ''आत्मा से परिपूर्ण'' है, उसका जीवन भक्तिपूर्ण है।

''परिपूर्ण'' (*plēroō*) सारे उपलब्ध स्थान को ''जाल में पड़ी मछली (मत्ती 13:48), सुगंध से भरे घर (यूहन्ना 12:3); तराई की तरह भरना (लूका 3:5)'' का विचार देता है।[8] समझदारी से या मूर्खता से, सावधानी से या बेपरवाही से चलने में अन्तर, ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने के लिए ग्रहण होने का है।

''आत्मा से परिपूर्ण'' होना ''दाखरस से मतवाले'' होने से अलग है। जो कुछ व्यक्ति के मन में होता है, उसी से उसके कार्य संचालित होते हैं, चाहे वह भलाई के लिए हो या बुराई के लिए। मसीही व्यक्ति को ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने के लिए तैयार रहना चाहिए। आत्मा के स्वभाव से भरे होने की बात ''पवित्र आत्मा के दान'' से अलग है, जो बपतिस्मे के समय मिलता है (प्रेरितों 2:38)। आत्मा का दान स्वयं आत्मा है, जो विश्वासी को दिया जाता और उसमें वास करता है (प्रेरितों 5:32; 1 कुरिन्थियों 6:19)। इफिसियों को पौलुस ने जो कुछ पहले कहा, उसके अनुसार यह दान आत्मा के द्वारा शक्ति के साथ भीतरी मनुष्य को मज़बूत करने का है (3:16)। मसीही व्यक्ति के जीवन में आत्मा की सामर्थ आत्मा के परमेश्वर के नियन्त्रण में उसकी सहायता करने में उसकी इच्छा और उसके भरोसे से संचालित होती है। जहां शराबी व्यक्ति अपने आपको शराब के वश में कर देता है, वही मसीही व्यक्ति अपनी समझ, अपनी भावनाओं और अपनी इच्छाओं को परमेश्वर की इच्छा को सौंप देता है। फिर आत्मा परमेश्वर के नियन्त्रण में होने में उसकी सहायता कर सकता है।

आयत 19. मसीही व्यक्ति के आत्मा से परिपूर्ण होने का प्रमाण आश्चर्यकर्मों के चिह्न दिखाना नहीं, बल्कि उसकी पसन्द से मिलता है। पहले तो ''आत्मा से परिपूर्ण'' वे लोग हैं, जो आराधना करते हैं। **गाया करो** अवश्य ही पवित्र लोगों की सभा के लिए कहा गया है, क्योंकि पौलुस ने कहा कि **आपस में**। यह व्यक्तिगत आराधना नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है, जो दूसरों

के साथ किया जाता है।

गाने में **भजन** (*psalmos*) **स्तुतिगान** (*humnos*) और आत्मिक गीत (*ōidē*) शामिल होता है। उद्देश्य एक-दूसरे को सिखाना, समझाना और ताड़ना होता है। (देखें कुलुस्सियों 3:16, जहां पौलुस ने ''एक-दूसरे को सिखाने और चिताने'' की बात की।) ''बातें करना'' और ''सिखाना और चिताना'' ''भजनों'' के साथ होना आवश्यक है। ''भजनों'' से पौलुस का अभिप्राय बेशक पुराने नियम के वे भजन होगा, जो गाए जाने के लिए लिखे गए थे। बहुत से भजन आज कलीसिया द्वारा गाने में दिखाए जाते और इस्तेमाल किए जाते हैं। ''स्तुतिगान'' धार्मिक कविताएं हैं जो लय पर बिठाई जाती हैं, और परमेश्वर को सम्बोधित होती हैं या परमेश्वर के बारे मे होती हैं। गाने जो ''आत्मिक'' (*pneumatikos*) वे सांसारिक विषयों से न होकर धार्मिक विषयों पर होते हैं और उन से शिक्षा, प्रोत्साहन, चेतावनी या तुरन्त आज्ञापालन की बात हो सकती है। ''भजन'' और ''स्तुतिगान'' और ''आत्मिक गीत'' में स्पष्ट अन्तर का संकेत देना कठिन है। पौलुस ने चाहे इन्हें अलग-अलग लिखा है, परन्तु उसने केवल समानार्थक शब्दों के रूप में इस्तेमाल किया होगा। ये तीनों शब्द धार्मिक गीतों के लिए LXX (अर्थात सप्तत्ति अनुवाद) में भजनों में आम तौर पर इस्तेमाल किए गए हैं, और इनका इस्तेमाल एक-दूसरे के साथ-साथ हुआ है।[9] पहली सदी के यहूदी इतिहासकार फलेवियस जोसेफस ने अपने लेखों में ''स्तुतिगान'' के साथ ''भजनों'' और ''गीतों'' को जोड़ा है।[10] इन शब्दों की परिभाषाएं चाहे अलग अलग हैं, परन्तु इस बात पर सभी सहमत हैं कि पौलुस के निर्देश के अनुसार गाए जाने वाली बात परमेश्वर से और हमारे उसकी आराधना करने से सम्बन्धित है।

गाने का उद्देश्य दोहरा है। पहला तो यह सिखाने, चिताने और आमने सामने *आपस में* बातें करने के लिए है। दूसरा यह धन्यवाद के साथ *परमेश्वर की ओर* ऊपर को पहुंचना है (देखें कुलुस्सियों 3:16)। गाना ''सिखाने'' या निर्देश लेने[11] और ''चिताने'' अर्थात ''चेतावनी देने, समझाने ... प्रोत्साहन (या) डांट (देने)'' के लिए बनाया गया है।[12]

यूनानी भाषा में **कीर्तन** करते रहो के लिए *psallō* का एक रूप *psallontes* है। इसके सही-सही अर्थ पर बहुत विवाद खड़ा हुआ है। सत्रह यूनानी-अंग्रेज़ी शब्दकोषों से परिभाषाएं लेने के बाद एम. सी. कुर्फीस ने निष्कर्ष निकाला कि सदियों से *psallō* का अनुवाद पांच अलग-अलग अर्थों में किया गया है:

> (1) बाल तोड़ना; (2) कमान की तार को टनकारना; (3) बढ़ई की रेखा खींचना; (4) ताल बनाने के लिए बाजे के तार छेड़ना; और (5) गाने, महिमा के स्तुतिगानों के साथ मनाने के लिए मानवीय हृदय के तार छूना।[13]

कुर्फीस ने *psallō* के पहले तीन उपयोगों को यह कहते हुए खारिज किया कि इनका आराधना से कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर शब्दकोषों से यह दिखाने के लिए कि *नये नियम में इस शब्द का अर्थ गाने में परमेश्वर की महिमा गाना है,* आगे बढ़ा।[14] अपनी पुस्तक में कुर्फीस ने कलीसिया के पुरखाओं (कलीसिया के अगुवे जो प्रेरितों के पहले कुछ सौ सालों के भीतर रहे) दोबारा *psallō* के इस्तेमाल, विशेष और सामान्य आज्ञाओं के प्रकाश में इसके इस्तेमाल और नये नियम में इसके इस्तेमाल की समीक्षा की। उसने निष्कर्ष निकाला कि पहली सदी की कलीसिया का

संगीत हमेशा और केवल गले का होता था।

नये नियम में गाने की आज्ञा का पुराने नियम में हो चुकी बातों, स्वर्ग में होने वाली बातों या लोगों को आकर्षित लगने वाली बातों से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका सम्बन्ध केवल इसी बात से है, कि नई वाचा में रहने वाले लोगों से परमेश्वर ने आराधना में करने अर्थात गाने के लिए क्या कहा। यदि कोई चौकसी से और बुद्धि से रहता है, तो वह बिल्कुल वही करेगा जो परमेश्वर ने उससे करने को कहा है।

अपने-अपने मन में प्रभु के सामने सुर मिलाने की बात आराधना के सीधे पहलू पर ज़ोर देती है क्योंकि आराधना ''प्रभु के सामने'' की जानी आवश्यक है। इब्रानियों 13:15 में लेखक ने कहा कि मसीह के द्वारा हमें ''स्तुति के बलिदान, अर्थात उन होंठों का फल, जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया'' जाना चाहिए। आराधना से मसीह की समस्त देह को लाभ मिलता है, परन्तु यह मण्डली में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा परमेश्वर के सामने की जाती है। छेड़ा जाने वाला साज दिल है। ताड़ना ''गाने'' की है, जिसमें निश्चय ही मुंह शामिल होता है; परन्तु *psallō* का साज दिल है। पवित्र शास्त्र से या कलीसिया के इतिहास से ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि पहली सदी की कलीसिया आराधना में संगीत के किसी प्रकार के मशीनी यंत्र का इस्तेमाल करती हो। इसके विपरीत हर प्रमाण यह सुझाव देता है कि कलीसिया की आराधना में संगीत गले का होता था।

यह कहते हुए कि ''बाइबल इसके इस्तेमाल पर कुछ *नहीं* कहती है'' हम आराधना में गाने के लिए साजों का इस्तेमाल कर सकते हैं बिल्कुल अमान्य है। जब परमेश्वर हम से कुछ करने को कहता है तो उसे हमें हर सम्भावित विकल्प बताकर यह कहने की आवश्यकता नहीं होती है कि ''वह मत करना।'' परमेश्वर का वचन *विशिष्ट* के साथ-साथ जिससे आज्ञा दी गई बात से अलग कोई बात बाहर है, समूचा है जिसमें वह शामिल है जिसकी आज्ञा दी गई है और जो किसी भी बात को निकालने के साथ-साथ समाहित अर्थात जो कुछ उसने आज्ञा दी है उसे और जो कुछ उन आज्ञाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक है उस सब को शामिल करते हुए है। आराधकों के लिए ''प्रभु के सामने'' गाना और अपने दिलों के सुरों को मिलाना आवश्यक है। जब मसीह और परमेश्वर की परिपूर्णता वास करते हैं, तो आत्मा से परिपूर्ण होने वालों के आनन्दित मन प्रभु की महिमा में उमड़ते हैं।

आयत 20. ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने का दूसरा प्रमाण धन्यवाद है। पौलुस ने किसी समय कुछ बातों के लिए धन्यवाद करने को नहीं, बल्कि **सब बातों के लिए और सदा धन्यवाद** करने को कहा। 1 थिस्सलुनीकियों 5:18 में उसने लिखा, ''हर बात में धन्यवाद करो।'' मसीही व्यक्ति हर अच्छी बात के लिए धन्यवाद कर सकता है। वह यह जानते हुए कि परमेश्वर उनके लिए ''जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं सब बातों'' को मिलाकर भलाई उत्पन्न करता है, बुरी बातें आने पर भी धन्यवाद करता है (रोमियों 8:28)।

इफिसुस के लोगों को यह जानते हुए कि उसके द्वारा हमारी परमेश्वर तक पहुंच होती है (देखें यूहन्ना 14:13; 1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 13:15) और यह कि उसके द्वारा हमारी ''एक आत्मा में पिता के पास पहुंच'' है (2:18) **हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से** धन्यवाद देना आवश्यक है। हमें **परमेश्वर पिता** का अर्थात उसी का धन्यवाद देना होता है, जिसके बारे

में याकूब ने कहा, ''क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है'' (याकूब 1:17)।

आयत 21. मसीही लोगों के ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने का तीसरा प्रमाण यह है कि उन्हें **एक दूसरे के अधीन** होना आवश्यक है। यह ताड़ना पौलुस के पत्र के एक भाग के अन्त को चिह्नित करती है, परन्तु यह दूसरे भाग को भी चिह्नित करती है। प्रेरित ने परिवारों और दासता के साथ व्यवहार वाले पत्र के लम्बे भाग का परिचय देने के लिए एक-दूसरे के अधीन होने के विचार का इस्तेमाल किया। पौलुस चाहता था कि इफिसुस में मसीही लोग एक होकर रहें। ऐसा करने के लिए उन्हें परमेश्वर के प्रति समर्पण और विनम्रता को दिखाना, धीरज रखना, सहनशील होना और एक-दूसरे के लिए प्रेम करना आवश्यक है (4:2, 3)। इसके अलावा उन्हें भ्रमित बातों और कामों से चौकस रहकर जिनसे कलीसिया की एकता में हस्तक्षेप होता था, पवित्र आत्मा को शोकित करने से बचना ही था (4:25-32)। मिल-जुलकर रहने की कुंजी बनने के लिए एक-दूसरे के अधीन होना सीखना था।

''अधीन'' (*hupotassō*) ''नीचे'' (*hupo*) और ''के लिए'' (*tassō*) को मिलाता है।[15] *Tassō* का इस्तेमाल सैनिक अधिकारी के नीचे टुकड़ियों या जहाज़ों के आगे बढ़ने के लिए प्राचीन यूनानी सैनिक संदर्भ में किया जाता था; इसमें एक व्यक्ति के किसी दूसरे के अधीन होने की बात होती थी। इस आयत में क्रिया का अर्थ है ''अपने आपको किसी के अधीन करना, आज्ञा मानना।''[16] पौलुस के लेखों में एक और जगह अधीनता की अवधारणा का इस्तेमाल केवल ''स्त्रियों (1 कुरिन्थियों 14:34; कुलुस्सियों 3:18; 1 तीमुथियुस 2:11; तीतुस 2:5), बच्चों (1 तीमुथियुस 3:4), और दासों (तीतुस 2:9) के *विशेष समूहों के व्यवहार के लिए* या *राज्य के प्रति विश्वासियों के व्यवहार के लिए* (रोमियों 13:1, 5; तीतुस 3:1)'' किया गया है।[17]

मसीह के भय से सुझाव मिलता है कि जो लोग मसीह का आदर और सम्मान करते हैं वे दूसरों के साथ भी आदर और सम्मान के साथ व्यवहार करेंगे। NIV में कहा गया है, ''मसीह के लिए और मसीह के कारण एक-दूसरे के अधीन हो,'' जबकि KJV में ''परमेश्वर के भय'' की बात की है। विनम्रता वाला व्यवहार दिखाना और दूसरों की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से अधिक मानना मसीह के नमूने पर चलना है (देखें फिलिप्पियों 2:3-8)।

5:21 में सामान्य नियम ठहरा देने के बाद पौलुस ने पत्नियों और पतियों के लिए, माता-पिता और बच्चों के लिए और स्वामियों और दासों के लिए 5:22—6:9 पर विशेष रूप से लागू किया।

पतियों और पत्नियों के रूप में सम्बन्धों का आदर करना (5:22-33)

कुलुस्सियों 3 की तरह इफिसियों 5 में पौलुस ने कलीसिया के भीतर पतियों और पत्नियों के बीच सम्बन्धों पर बात की। उसने पत्नियों से बात करते हुए इस निर्देश का आरम्भ किया, परन्तु जो कुछ उसने कहा उसमें से अधिकतर बातें पतियों के लिए थीं। 1 पतरस 3:1-7 में दिए गए इस बल को उलटा दिया गया।

हे पत्नियो: ''अधीन रहो'' (5:22-24)

[22]हे पत्नियो, अपने-अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। [23]क्योंकि पति-पत्नी का सिर है, जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। [24]पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के आधीन रहें।

आयत 22. पत्नियों को **अपने-अपने पति के अधीन** रहने को कहा गया है। मसीही लोगों के एक-दूसरे के अधीन होने के संदर्भ में आयत 21 की अकेली क्रिया (*hupotassō* से) और पत्नियों के अपने पतियों के अधीन होने के सम्बन्ध में आयत 22 से मेल खाती है। अधिकतर बातों में यह संकेत देने के लिए क्रिया शब्द मूल धर्मशास्त्र में नहीं था, बल्कि इस विचार का संकेत होने के कारण इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था, आयत 22 में ''अधीन रहो'' को तिरछा किया जाता है। मूल में पौलुस ने कहा, ''एक दूसरे के अधीन रहो, ... पत्नियां अपने ही पतियों के।'' बाद में आयत 24 में पौलुस ने स्पष्ट कह दिया कि पत्नियां अपने-अपने पतियों के अधीन रहें।

पत्नियों के लिए इस आज्ञा में अपने पतियों के सम्मान के साथ-साथ (इफिसियों 5:33) उनके अधीन होना और आज्ञा मानना शामिल है (देखें 1 पतरस 3:1, 6)। पत्नी के अपने पति के अधीन होने का मॉडल कलीसिया का मसीह के अधीन होना है (5:24)। पौलुस के निष्कर्ष को पहली सदी की इफिसुस की संस्कृति में उसकी शिक्षा को समझने के ढंग से मज़बूती मिली होगी। सामान्य अर्थ में पति और पत्नियां एक-दूसरे के अधीन थे, परन्तु विशेष अर्थ में पत्नियों को अपने अपने पति के ''अधीन होना'' था।

जैसे प्रभु के सुझाव देता है कि पत्नियां अपने पतियों के अधीन रहें ''वैसे ही, उसी प्रकार से''[18] (*hōs*), वे यीशु के अधीन हैं। अपने पतियों की आज्ञा मानकर पत्नियां मसीह की आज्ञा मान रही होती हैं। यह विचार कुलुस्सियों 3:18 में दिखाया गया है, जहां पौलुस ने कहा, ''हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, वैसा ही अपने-अपने पति के आधीन रहो।''

पत्नियों का पतियों के अधीन होने का योग्यता से (पति-पत्नियों से अधिक योग्य नहीं हैं) या परमेश्वर की दृष्टि में खड़े होने से (परमेश्वर के सामने पुरुषों और स्त्रियों को समान दर्जा दिया गया है, गलातियों 3:28) कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके बजाय अधीनता का सम्बन्ध पतियों और पत्नियों को परमेश्वर द्वारा दी गई अलग-अलग भूमिकाओं से है। पत्नियों को अपने पतियों और मसीह के अधीन होना आवश्यक है।

आयत 23. फिर पौलुस ने पत्नियों के लिए अपने-अपने पतियों के अधीन होने का कारण समझाया। ''क्योंकि'' समुच्चय-बोधक *hoti* का अनुवाद है और अंग्रेज़ी शब्द ''because'' से मेल खाता है।[19] पौलुस ने कहा, **क्योंकि पति-पत्नी का सिर है, जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है।** वह पतियों और पत्नियों के बीच और मसीह और कलीसिया के बीच एकरूपता बना रहा था। परिवार में पति की भूमिका वैसी ही है जैसी कलीसिया में मसीह की भूमिका है। इस भूमिका को ''सिर'' के रूप में वर्णित किया गया है जो ''अगुआ या शासक'' के अर्थ के साथ *kephalē* का अनुवाद है।[20] पहले पौलुस ने कलीसिया ''उसकी देह'' (1:23) के सिर

के रूप में मसीह के वर्णन के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया था। बेशक उसके दिमाग में अगुवे और शासक के रूप में मसीह का अधिकार था (देखें मत्ती 28:18)। इसी प्रकार पतियों के पास अगुआई करने और शासन करने का अधिकार है। परिवार में परमेश्वर का नमूना कलीसिया में उसके नमूने के अनुसार हैं। इस अधिकार के होने को इस अर्थ में नहीं देखा जाना चाहिए कि जैसे नियन्त्रण उसके हाथ में हो, बल्कि एक अगुवे के रूप में देखा जाना चाहिए। इस तथ्य को अगली आयतों में पौलुस द्वारा पतियों को दिए निर्देशों में देखा जाता है।

और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है बेशक मसीह के लिए कहा गया है। मसीह के उनकी अगुआई करने के अर्थ को छोड़ पौलुस यह नहीं कह रहा था कि पति अपनी पत्नियों के उद्धारकर्त्ता हैं। कलीसिया के सिर मसीह के और विवरण के रूप में उसने ये शब्द जोड़ दिए।

इफिसुस के लोग किसी समय बिना उद्धार की स्थिति में रहते थे (2:1-3)। अपने पाप में वे परमेश्वर से अलग किए हुए थे। परमेश्वर ने मसीह के मिलाने के काम के द्वारा उन्हें बचाने के लिए अनुग्रहपूर्वक काम किया था (2:4-22)। मसीह में उन्हें परमेश्वर के साथ ''एक देह'' (2:16), अर्थात ''कलीसिया'' (1:22, 23) में मिलाया गया है। इसलिए वे मसीह की मिलाई हुई और उद्धार पाई हुई देह बन गए थे। ''देह का उद्धारकर्त्ता'' के रूप में मसीह की बात करते हुए पौलुस के कहने का यही अर्थ था। क्रिया शब्द *estin* जिसका अनुवाद ''है'' हुआ है किसी ऐसी बात का संकेत देता है जो वर्तमान में हो रही है। यह इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मसीह कलीसिया का उद्धार केवल अनन्तकाल में नहीं करेगा बल्कि यह उन लोगों से बनी है जो इस समय उद्धार पाए हुए हैं।

आयत 24. पौलुस अपने रूपक की ओर लौट आया। एक टीकाकार ने लिखा है:

> यदि कोई पूछे कि लेखक की सोच कलीसिया के मसीह के अधीन होने में शामिल है तो इस बात के उत्तर के लिए कि पत्र के शेष भाग में मसीह के साथ कलीसिया के सम्बन्ध को दिखाने के उसके ढंग को देख सकता है। कलीसिया को मसीह के इसकी हर बात पर सिर होने का परमेश्वर का दान मिलता है (1:22)। 2:20, 21 के भवन के रूपक में मसीह के लिए कलीसिया इस निर्माण के [कोने का] पत्थर की तरह लगती है जो इन सब को मिलाकर रहता है। इसका आरम्भ उसकी निरन्तर उपस्थिति से होता है (3:17) और उसके हर तरफ पाए जाने वाले प्रेम को जान लेता है (3:19)। कलीसिया को अनुग्रह का उसका दान मिलता है (4:7) और अपने आपको बनाने के लिए सेवकों के उसके दान मिलते हैं (4:11, 12)। यह अपने सिर की ओर बढ़ती है और उससे वह सब प्राप्त करती है, जो इसके विकास के लिए आवश्यक है (4:15, 16), जिसमें उससे शिक्षा पाना भी शामिल है (4:20, 21)। कलीसिया मसीह के प्रेम का अनुसरण करती है (5:2) और जो कुछ उसे भाता है उसे जानने (5:10) और उसकी इच्छा को समझने (5:17) का प्रयास करती है। यह उसकी महिमा गाती है (5:19) और उसके भय में रहती है (5:21)। इसका अर्थ यह है कि कलीसिया के अधीन होने का अर्थ उसके लाभकारी शासन के लिए अपने सिर की ओर देखना, उसके नियमों के अनुसार चलना, उसकी उपस्थिति और प्रेम को अनुभव करना, उसके दानों से ग्रहण करना और परिपक्व होने

के लिए बढ़ने के लिए दान पाना, और आभार और भय में उसकी बात मानना है। यही व्यवहार अपने पति के सम्बन्ध में पत्नी को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।[21]

पौलुस ने घोषणा की कि **पत्नियां हर बात में अपने-अपने पति के अधीन** वैसे ही रहें **जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है।** पत्नियों की अधीनता पर उसने कोई अपवाद या सीमा नहीं लगाई जो इस बात का संकेत है कि पतियों को अपनी पत्नियों से किसी बात की आवश्यकता हो सकती है जो मसीह के प्रति आज्ञापालन में रुकावट हो। इसके बजाय उसने यह मान लिया कि पति, अपने व्यवहार को मसीह के व्यवहार के साथ मिलाते हुए अपनी पत्नियों से केवल वही करने को कहेंगे जो मसीह को भाता हो और उनके लिए लाभदायक है। मानवीय त्रुटियों के कारण सम्बन्धों में दरारों के कारण इस आदर्श स्थिति को कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता। परन्तु उद्देश्य पत्नियों और पतियों के लिए प्रेम और निस्वार्थपन में एक-दूसरे की बात मानना था। अगली आयतें इस लक्ष्य का समर्थन करती हैं।

पतियो: ''प्रेम रखो'' (5:25-33)

[25]हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। [26]कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। [27]और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो। [28]इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। [29]क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। [30]इस लिए कि हम उस की देह के अंग हैं। [31]इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।

[32]यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। [33]पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

आयत 25. अपना फोकस पत्नियों से हटाकर पतियों की ओर लगा ते हुए पौलुस ने लिखा, **हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो।** पत्नियों के लिए अपने अपने पतियों के अधीन होने की आज्ञा को आयतें 25 से 32 के लिए अपनी पत्नियों के लिए पतियों की जिम्मेदारियों के साथ संतुलित कर दिया गया है। यह भाग दो भागों में बंट जाता है। पहला भाग पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम रखने के लिए समझाता है। पौलुस ने दिखाया कि कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम के चित्र को दिखाते हुए ऐसा किस प्रकार किया जा सकता है (5:25-27)। दूसरा भाग अपनी पत्नियों के लिए पतियों के प्रेम को विस्तार देता है। यहां पर पौलुस ने ध्यान दिलाया कि पति अपनी पत्नियों के साथ वैसे ही व्यवहार करें, जैसे वे अपने साथ करते हैं, बिल्कुल वैसे जैसे मसीह कलीसिया की देखभाल करता है (5:28-32)।

इस पत्र में प्रेम कोई नई अवधारणा नहीं है। पौलुस ने पहले परमेश्वर के प्रेम (2:4) और मसीह के प्रेम (3:19; 5:22) की बात की थी। बाद में उसने परमेश्वर और मसीह के

प्रेम (6:23, 24) के साथ-साथ फिर से इफिसियों के प्रेम की बात की। इन आयतों में पौलुस कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम को ध्यान में रखकर पत्नियों के लिए पतियों के प्रेम की बात कर रहा था।

''हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो'' की अवश्य माननीय बात रोमांस के प्रेम या भावनात्मक प्रेम के रूप में गलत समझी जा सकती है। परन्तु पौलुस ने इस पूरे भाग में *agapaō* (''प्रेम, शुभ इच्छा'') के रूप का इस्तेमाल करके उसने स्पष्ट कर दिया कि उसके मन में कौन सा प्रेम था (देखें 5:1, 2)। प्रेम पतियों को अपनी पत्नियों से रखना आवश्यक है, वह उनकी भलाई की चाह रखने का निर्णय लेने के कारण है। यह सहायता करने का न कि चोट पहुंचाने का, बनाने का न कि तोड़ने का, प्रोत्साहित करने का न कि निराश करने का निर्णय है।

आयत 25. पत्नियों के लिए पतियों का प्रेम कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम के नमूने के अनुसार होना चाहिए: **जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।** पति का प्रेम केवल एक निर्णय ही नहीं, बल्कि अपना बलिदान करने वाला होना आवश्यक है। मसीह ने संसार के पाप के लिए अपने आपको जब क्रूस पर दे दिया तो उसने अपने लहू के साथ कलीसिया को खरीद लिया (देखें प्रेरितों 20:28)। उसकी बलिदानपूर्वक मृत्यु अधीन होने का इतना बड़ा कार्य था, जो संसार में ऐसा कभी नहीं हुआ। कलीसिया को अस्तित्व में लाने, बढ़ने के लिए इसका पालन-पोषण करने और अन्त में इसे स्वर्ग में ले जाने के लिए यीशु ने ''अपने आपको उसके लिए दे दिया।'' यह एकरूपता कलीसिया को मसीह की दुल्हन के रूप में दिखाती है और ऐसा कुछ नहीं है, जो मसीह अपनी दुल्हन की भलाई के लिए बलिदान न करे। इसी प्रकार पतियों के लिए अपने आपको अपनी पत्नियों के लिए दे देना आवश्यक है। पत्नियों और पतियों के बीच एक-दूसरे के लिए आदर से परिवार के लिए परमेश्वर की योजना से मेल खाता उनका सम्बन्ध मिलता है। विवाह के पौलुस के दर्शन में पत्नियां अपने पतियों से मिले ''सम्पूर्ण प्रेम के लिए पूरी तरह अधीन''[22] होती हैं। कैनथ एस. वुएस्ट ने आयत 25 में एक महत्वपूर्ण टिप्पणी जोड़ी:

> अपनी पत्नी के लिए पति का प्रेम तीन और प्रकार से है, वासना का प्रेम (*eros*), आनन्द और सन्तुष्टि का प्रेम (*stergo*) और स्नेह या लगाव (*phileo*)। ये सभी आत्मा से परिपूर्ण पति, स्वभाव में पवित्र और स्वर्गीय बनें पति के *agapao* प्रेम के साथ तर-बतर हैं।[23]

आयत 26. आयतें 26 और 27 में पौलुस ने आगे वे तीन कारण समझाए कि मसीह ने कलीसिया के लिए बलिदानपूर्वक प्रेम में अपने आपको दिया। दिए गए तीनों कारणों का आरम्भ *hina* के साथ होता है, इसका अर्थ है ''इसलिए कि।''

पहले मसीह ने अपने आपको कलीसिया के लिए दे दिया **कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए।** ''पवित्र बनाए'' (*hagios* [''holy''] का एक क्रिया रूप), का अर्थ ''पवित्र उपयोग के लिए अलग करना'' है।[24] इस शब्द का इस्तेमाल एक और यूनानी शब्द *koinos* के विपरीत किया जाता है, जिसका इस्तेमाल इस संदर्भ में नहीं हुआ, परन्तु उसका अर्थ ''अशुद्ध, सामान्य, दूषित'' है।[25] पवित्र होने के लिए उससे जो अपवित्र या

अशुद्ध है, निकलना या अलग होना यानी संसार परमेश्वर के पवित्र उद्देश्य के लिए अलग होना है। कलीसिया लोगों से बनती है, जिनकी आत्माओं को मसीह के लहू के द्वारा पवित्र किया जाता है (1 पतरस 1:22) ''परमेश्वर की निज प्रजा (हैं) ... जिसने (उन्हें) अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है'' (1 पतरस 2:9)। कलीसिया को संसार में से बुलाया गया और परमेश्वर के पवित्र उद्देश्य के लिए अलग किया गया था। इस पत्र में परमेश्वर के लोगों की पवित्रता पर आमतौर पर ज़ोर दिया गया है। पौलुस ने मसीही लोगों को ''संत'' या ''पवित्र लोग'' कहा है (देखें 1:1, 4, 15, 18; 2:19; 3:18; 4:12; 5:3)। ''पवित्र लोग'' यूनानी शब्द *hagios* का अनुवाद है। (इस पुस्तक में आगे ''और अध्ययन के लिए: कलीसिया की पवित्रता [5:26]'' देखें।)

''वचन के द्वारा'' *en rhēmati* का अनुवाद है, जो मूल में ''वचन में'' है। (अंग्रेजी में the अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है।) कलीसिया का शुद्ध किया जाना ''वचन के साथ'' बपतिस्मे के पानी से प्रभावित हुआ था। ''वचन'' यहां पर सुसमाचार के वचन को कहा गया हो सकता है, जिसका प्रचार किया गया था और जिसने लोगों को शुद्ध किए जाने के लिए बपतिस्मे की आवश्यकता दोहराई थी। उदाहरण के लिए इससे बपतिस्मे के समय कहे जाने वाले वचन ध्यान में आते हैं, ''मसीह के अधिकार से मैं तुम्हें पापों की क्षमा के लिए पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देता हूं, ताकि तुम्हें पवित्र आत्मा का दान मिल सके'' (देखें मत्ती 28:18, 19; प्रेरितों 2:38)। शायद इस में बपतिस्मे से जुड़ी उद्धार की प्रतिज्ञा भी है (मरकुस 16:16)। 6:17 में ''वचन'' ''परमेश्वर का वचन'' और ''आत्मा की तलवार'' है जिसका प्रचार किया जाना है (देखें रोमियों 10:8, 17; इब्रानियों 6:5; 1 पतरस 1:25)। उसके वचन में शुद्ध करने और पवित्र करने की सामर्थ है (देखें यूहन्ना 15:3; 17:17), इस कारण कलीसिया का पवित्र किया जाना तभी हुआ होगा जब मसीह ने वचन के साथ बपतिस्मे के द्वारा इसे शुद्ध किया। जल और वचन दोनों का योगदान था।

आयत 27. *Hina* का दूसरा उपयोग और दूसरा उद्देश्य जिसके लिए मसीह ने कलीसिया के लिए अपने आपको दिया था आयत 27 में मिलता है: **और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो।** मसीह ने कलीसिया को अपनी पवित्र दुल्हन के रूप में अपने लिए पेश किया। 2 कुरिन्थियों 11:2 में पौलुस ने अपने आपको दुल्हन के पिता या दूल्हे के मित्र के रूप में बताया जिसने निष्कलंक दुल्हन के रूप में कुरिन्थुस की कलीसिया को मसीह को सौंपना था, परन्तु इफिसियों की पुस्तक में मसीह को कलीसिया को ''तेजस्वी'' पेश करने की बात कही गई थी। ''तेज'' *endoxos* का अनुवाद एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल इस पत्र में कहीं और कलीसिया के सम्बन्ध में किया गया है, जिसमें ''शान'' का विचार पाया जाता है।[26] कलीसिया की विरासत तेजस्वी है (1:18) और कलीसिया परमेश्वर को महिमा दिलाती है (3:21)। आयत 27 में ''तेज'' ''नैतिक सिद्धता'' में लिपटी मसीह की निष्कलंक दुल्हन के रूप में कलीसिया के विवरण में बढ़ावा देता है।[27]

पिछले वाक्यांश में ''तेज'' से अलग ''**जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो**'' इस बात पर ज़ोर देता है कि मसीह की दुल्हन नैतिक कलंक, गंदगी या कुरूपता से

रहित है। विवाह की प्राचीन परम्पराओं से मेल खाते हुए दूल्हे ने दुल्हन के घर में आना था, दहेज देकर अपने घर में इस इरादे से लौट जाना था कि वह फिर से अपनी निष्कलंक दुल्हन से विवाह करने आएगा। इसी प्रकार से मसीह आया और उसने दहेज के रूप में ''अपने आपको दे दिया'' (5:25), स्वर्ग में लौट गया और अपनी निष्कलंक दुल्हन को लेने फिर से आ रहा है। कलीसिया को उसके सामने पेश किया जाना समय के अन्त में होगा। यह 2 कुरिन्थियों 11:2 में पौलुस की बात से और प्रकाशितवाक्य 19 के विवाह के भोज के रूपक से मेल खाता है।

वरन पवित्र और निर्दोष हो। यह *hina* का तीसरा उपयोग और कलीसिया के लिए मसीह के ''अपने आपको दे दिया'' का तीसरा कारण है। ''पवित्र और निर्दोष'' का इस्तेमाल पौलुस द्वारा (1:4) इफिसियों को मसीह में ''जगत की उत्पत्ति से पहले चुन'' लेने के परमेश्वर के उद्देश्य को दिखाने के लिए गया। वह चाहता था कि वे ''उसके निकट पवित्र और निर्दोष'' हों। अपवित्रता और दोष उन लोगों की खूबियां हैं, जो परमेश्वर को नहीं जानते थे, परन्तु पवित्रता और निर्दोषपन कलीसिया की विशेषता है। कलीसिया मसीह के लहू द्वारा जो उसके ''अपने आपको उसके लिए दे'' देने के रूप में क्रूस पर बहने वाले लहू से शुद्ध होना सम्भव बनाने के कारण अब ''पवित्र और निर्दोष'' हैं। कलीसिया ज्योति में चलते रहकर और उसके लहू के द्वारा शुद्ध होकर ''पवित्र और निर्दोष'' रहती है (1 यूहन्ना 1:7)। मसीह जब दोबारा आएगा तो वह अपने सामने एक निष्कंलक दुल्हन को पेश करेगा। कलीसिया को लहू के द्वारा शुद्ध किया गया है इस कारण इसे ''पवित्र और निर्दोष'' माना जा सकता है। मसीह की कलीसिया के सदस्यों अर्थात उसकी देह और उसकी दुल्हन के रूप में हमें इन शिक्षाओं के अनुसार रहना आवश्यक है, जो पौलुस ने इस पत्र में दीं।

आयत 28. अपनी पत्नियों के प्रति पतियों की जवाबदेही को बताने के लिए पौलुस ने एक उदाहरण के रूप में कि पतियों को अपनी पत्नियों की देखभाल कैसे करनी चाहिए, कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम का इस्तेमाल किया। उसने कहा, **इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे।** ''इसी प्रकार'' *houtōs* का अनुवाद है और संकेत देता है कि अगली बात इस तथ्य से सम्बन्धित है कि पति अपनी पत्नियों से प्रेम रखें ''जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (5:25)। ''उचित है'' *opheilō* का अनुवाद है जिसका अर्थ ''नैतिक या व्यक्तिगत जवाबदेही के कारण देनदारी''[28] है (देखें यूहन्ना 13:14)। ''अपनी देह के समान'' (5:28) का अर्थ है कि पति ''अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे'' (5:33)। एस. डी. एफ़. सैलमण्ड ने टिप्पणी की है:

> इसे ''जैसे अपने आपको'' तक नहीं घटाना चाहिए ... ; न ही *hos* [''जैसे''] का अर्थ यहां केवल ''की तरह'' है, जैसे इसका अर्थ इतना ही हो कि अपनी पत्नी के लिए पति का प्रेम *वैसा* ही हो जैसे वह अपनी देह से प्रेम करता है। *Hos* में *गुणात्मक* बल है, = ''के जैसे,'' ''की तरह।'' *मसीह* और *पति* दोनों *सिर* हैं, जैसे पौलुस ने पहले ही बताया है और पहले वाले के सम्बन्ध में देह कलीसिया है, वैसे ही बाद वाले के सम्बन्ध में पत्नी है। इसलिए पति के लिए जो कि सिर है अपनी देह होने के कारण पत्नी से प्रेम रखना आवश्यक है, बिल्कुल वैसे जैसे अपनी देह को बनाने के रूप में मसीह कलीसिया

से प्रेम करता है। पति और पत्नी के *एक तन* होने का विचार भी सम्भवतया ध्यान में रखा गया है।[29]

आयतें 28, 29. प्रकृति से पता चलता है, कि आम तौर पर लोग अपने शरीर या देह से घृणा नहीं करते। इसलिए प्रकृति पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम रखने को कहती है क्योंकि वे अपने पतियों का महत्वपूर्ण भाग बन जाती हैं। पति अपनी पत्नियों के सिर हैं, वैसे ही जैसे मसीह अपनी देह अर्थात कलीसिया का सिर है। इस समानता की ओर ध्यान दिलाकर पौलुस ने संकेत दिया कि पतियों का अपनी पत्नियों के ऊपर सिर होना सही है। फिर पति अपनी पत्नियों से प्रेम रखते हुए उन से प्रेम करते हैं। पति जैसे अपने शरीर का **पालन-पोषण** करता है वैसे ही उसे चाहिए कि अपनी पत्नी का ''पालन-पोषण'' करे, **जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है**।

''पालन'' *ek* (''से'') और *trephō* (''खिलाकर मोटा करना; इसलिए, खिलाना, पालना, पोषण करना'')[30] से बने मिश्रित शब्द *ektrephō* का अनुवाद है। इसी मूल शब्द का अनुवाद 6:4 में ''पालन-पोषण'' हुआ है जहां इसका इस्तेमाल बच्चों के प्रशिक्षण के संदर्भ में हुआ है। जिस प्रकार मसीह ने बपतिस्मे और वचन के द्वारा कलीसिया को पवित्र करना और शुद्ध किया जाना उपलब्ध कराया है (देखें 5:26) और जैसा उसने कलीसिया को परिपक्व करने के लिए उपाय किया है (4:11-16), वैसे ही पतियों के लिए अपनी-अपनी पत्नियों की उन्नति में उनकी सहायता करनी आवश्यक है।

''पोषण'' (*thalpō*) का सम्बन्ध गर्मी या गर्माइश से है।[31] 1 थिस्सलुनीकियों 2:7 में अपने स्वयं के बच्चों की देखभाल करती मां की बात की गई है। ''पोषण'' कलीसिया की देखभाल में मसीह की कोमलता का वर्णन करता है और पतियों को याद दिलाता है कि वे अपनी पत्नियों की बढ़ोतरी और भलाई कोमलता से और प्रेम से काम करें।

आयत 30. इसलिए कि हम उस की देह के अंग हैं इस तथ्य की बात करता है कि मसीही लोगों का अपने सिर यीशु मसीह के साथ स्नेही सम्बन्ध है जो उनकी देखभाल करता और अपनी देह के रूप में उनकी आवश्यकता को पूरा करता है। इसके अलावा मसीह प्रेमी और पालन पोषण करने वाले पति की तरह अपनी दुल्हन के लिए उपाय करते हुए कलीसिया की देखभाल करता है। हर सदस्य मसीह की देह का एक महत्वपूर्ण अंग हैं जिसे हमारे प्रभु ने ''अपने लोहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)। देह मसीह के लिए मूल्यवान है और मसीह का भाग है। वह अभिन्नता के साथ इससे जुड़ा हुआ है और इसकी आवश्यकताओं को पूरा करता है। उसी प्रकार से पतियों के लिए अपनी पत्नियों को महत्व देना और उन्हें स्नेपूर्वक पालन पोषण करने का हर प्रयास करना आवश्यक है।

आयत 31. इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। उत्पत्ति 2:24 से लिया गया यह उदाहरण पतियों और पत्नियों के बीच की एकता के सम्बन्ध में मसीही लोगों को अन्तिम स्मरण दिलाने का काम करता है। पौलुस ने पतियों से अपनी पत्नियों से ''अपनी देह के समान'' प्रेम रखने और पति के अपनी पत्नी से ''अपने आप से'' प्रेम रखने की तरह प्रेम करने को कहा (5:28)। इसके अलावा पौलुस ने कहा

कि ''किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा'' (5:29)। उत्पत्ति की पुस्तक से लिया गया यह कथन इस बात पर ज़ोर देता है कि पति और पत्नियां वास्तव में ''एक तन'' हैं।

आयत 32. पौलुस ने यह याद दिलाते हुए कि वह प्रतीक की भाषा में बात कर रहा था इस भाग को समाप्त किया। विवाह के **भेद** के द्वारा परमेश्वर ने पति और पत्नी को ''एक तन'' बनाया। यह रहस्यमयी एकता हमें **कलीसिया** को समझने में सहायक है। परमेश्वर ने **मसीह** को कलीसिया का सिर अर्थात दुल्हन का दूल्हा बनाया है। मसीही लोग मसीह की देह और मसीह की दुल्हन हैं।

आयत 33. कलीसिया के साथ मसीह के सम्बन्ध के भेद का पति/पत्नी सम्बन्ध में व्यवहारिक अर्थ है। जब पौलुस ने लिखा कि **पर** (*plēn*) तो एक अर्थ में वह कह रहा था, ''मैं उसी बात पर वापस आता हूं, जो मैं पत्नियों और पतियों के सम्बन्ध में कह रहा था।'' फिर उसने इस सच्चाई पर ज़ोर दिया कि किसी पति को इन बातों से छूट नहीं है। प्रेरित ने कहा, **हर एक अपनी पत्नी से ... प्रेम रखे**। इसी प्रकार इस आज्ञा में हर पत्नी को भी मिला लिया गया कि **पत्नी भी अपने पति का भय माने।** ''भय'' यूनानी क्रिया शब्द *phobeō* का अनुवाद है। इसका अर्थ चाहे ''डर'' है,[32] पर यह गुलाम का डर नहीं है बल्कि ''भक्ति का भय''[33] यानी ''आत्म बलिदान भरे प्रेम में अपने पति की प्रमुखता को मानने का'' उचित ढंग है।[34]

और अध्ययन के लिए: कलीसिया की पवित्रता (5:26)

इफिसियों 5:26 में ''पवित्र'' शब्द मसीह का एक कार्य है। यह निरन्तर या बार-बार किया जाने वाला कार्य नहीं है। मसीही लोग चाहे पवित्रता में बढ़ते रहते हैं पर पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि हम पहले से पवित्र किए हुए लोग हैं।

मसीह ने कलीसिया को पवित्र कर दिया जब उसने ''उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध'' किया। कालांतर में एक विशेष समय पर मसीह ने कलीसिया को शुद्ध करके उसे पवित्र कर दिया। (क्रिया शब्द जिसका अनुवाद ''शुद्ध करके'' हुआ है का यही महत्व है।) यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण नहीं है कि यह ''... वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध'' करने की बात लिखते हुए पौलुस के मन में अलंकारिक बात थी। बाइबल अध्ययन का एक अच्छा नियम वचन को मूल रूप में लेना है, जब तक इसे प्रतीकात्मक, सांकेतिक और अलंकारिक अर्थ में देखने का कोई कारण न हो। मसीह ने कलीसिया को ''स्नान'' के द्वारा जिसमें जल और ''वचन'' शामिल थे, शुद्ध किया। मूल में ''जल'' अपने लोगों के लिए प्रभु की योजना के भाग के रूप में पवित्र शास्त्र में हर जगह है।

उदाहरण के लिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यरदन नदी में लोगों को बपतिस्मा देते हुए मसीह के आने की तैयारी कर रहा था (मत्ती 3:6)। यीशु ने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया और जल में से ऊपर आया (मत्ती 3:16)। यूहन्ना ''शालेम के निकट एनोन में बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहां बहुत जल था'' (यूहन्ना 3:23)। यीशु ने परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की शर्त के रूप में जल और आत्मा से जन्म की बात की (यूहन्ना 3:5)। यीशु का संदेश सुनने के बाद हब्शी खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, ''देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?''

(प्रेरितों 8:36)। अपने विश्वास का अंगीकार करने के बाद हब्शी खोजा और फिलिप्पुस ''जल में उतर पड़े, और उसने खोजा को बपतिस्मा दिया'' (प्रेरितों 8:38)। पतरस जब अन्यजाति कुरनेलियुस के पास सुसमाचार लेकर गया तो उसने कहा, ''क्या कोई जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं'' (प्रेरितों 10:47)।

तीतुस 3:5 में पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने ''हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं जो हम ने किए, पर अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ'' जो कि आयत 26 की अच्छी व्याख्या है। मसीह की ''[कलीसिया] को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध'' करना परमेश्वर के ''नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के द्वारा हमें नया बनाने के द्वारा'' हमारा उद्धार करने जैसा ही है। तीतुस 3 का संदर्भ दिखाता है, कि मनुष्यजाति का उद्धार ''धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर उसकी दया के अनुसार ... जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बने'' (5:5-7)। परमेश्वर की दया और अनुग्रह से उसने मनुष्य का उद्धार सम्भव बनाया और यह उद्धार वास्तव में ''नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के नया बनाने के द्वारा'' मनुष्य को मिला, जो इसके योग्य था।

एलग्जैंडर कैम्पबेल ने इस बात की पुष्टि की कि ''नये जन्म का स्नान'' (2 कुरिन्थियों 5:17) मसीही बनने का अन्तिम कदम है।[35] उसने यह दिखाने के लिए कि आरम्भिक यूनानी कलीसिया के पुरखे इस कार्य को बपतिस्मा समझते थे, इतिहासकार युसिब्युस को उद्धृत किया।[36] अधिकतर व्याख्याकार इस पर सहमत हैं। कैम्पबेल ने आगे दावा किया कि ''नये जन्म का स्नान'' ''देह को शुद्ध जल से धुलवाने'' (इब्रानियों 10:22) या ''जल से जन्म'' (यूहन्ना 3:5) लेना है और जैसे नूह जल के द्वारा बचाया गया था, ''बपतिस्मा अब [हमें] बचाता है'' (1 पतरस 3:21)। कैम्पबेल ने यह भी कहा कि ''पवित्र आत्मा के नया बनाने'' की बात इफिसियों 5:26 में ''वचन के द्वारा शुद्ध'' करना ही है ''क्योंकि पवित्र आत्मा वचन के द्वारा पवित्र या शुद्ध करता है''[37] (यूहन्ना 15:3)।

1 कुरिन्थियों 6:11 में पौलुस ने कहा कि कुरिन्थुस के लोग वैसे ही ''धोए गए'' और ''पवित्र हुए'' थे जैसे इफिसियों को पवित्र किया गया, शुद्ध किया गया और धोया गया था। बेशक दोनों ही हवाले ''पापों की क्षमा के लिए'' (प्रेरितों 2:38), ''मसीह में'' आने के लिए (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27), और ''एक देह में'' आने के लिए (1 कुरिन्थियों 12:13) पानी में बपतिस्मे से जुड़े हैं। इतिहास में एक जगह मसीह ने कलीसिया के लिए मरने के लिए अपने आपको दे दिया। उसकी कलीसिया के हर सदस्य के लिए एक समय पाप से और अपने आप से मरना, बपतिस्मे में मसीह को अपने आपको देना आवश्यक है फिर उसे नये जीवन के लिए जिलाया जाता है (देखें रोमियों 6:4)। जिस प्रकार व्यक्तिगत रूप में मसीही व्यक्ति को शुद्ध किया जाता है, वैसे बहुत से सदस्यों की देह के रूप में कलीसिया को शुद्ध किया जाता है।

प्रासंगिकता

सही मार्ग में चलना

(2:1-10; 4:1, 17; 5:2, 8, 15)

''चलना'' जीने का एक अलंकार है। मसीही लोगों को चलने के अपने ढंग पर और इस पर ध्यान देना आवश्यक है कि हम किसके साथ चलते हैं।

संसार के अनुसार न चलें (2:2)। जो लोग संसार के अनुसार चलते हैं, वे खोए हुए हैं, क्योंकि वे इस थोड़ी देर के संसार के हैं, उस संसार के जो परमेश्वर से अलग है। वे उस राज्य का भाग हैं, जो परमेश्वर के राज्य के विरोध में है।

हम शैतान के अनुसार न चलें (2:2)। खोई हुई आत्माएं ''आकाश के अधिकार के हाकिम'' और ''उस आत्मा के जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है'' साथ मिली हुई हैं। उनके जीवनों पर विद्रोह का कब्जा है।

हम शरीर की अभिलाषाओं में न चलें (2:3)। खोए हुए लोग उस ढंग के बजाय जो परमेश्वर चाहता है कि उनके जीवन का हो, अपनी भावनाओं या कामनाओं के अनुसार रहते हैं।

हम क्रोध की संतान की तरह न चलें (2:3)। जो लोग खोए हुए हैं वे पाप भरे ''मानवीय स्वभाव'' अर्थात आदम के स्वभाव में रहते हैं और परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं। रोमियों 1:18 चेतावनी देता है, ''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।''

हम योग्य चाल चलें (4:1)। पौलुस ने मसीही लोगों से आग्रह किया कि ''जिस बुलाहट से हम [बुलाए गए थे] उसके योग्य चाल'' चलें। हमें परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी दया के अनुसार रहने के लिए परमेश्वर की पवित्र बुलाहट मिली है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 2 तीमुथियुस 1:9)। हम व्यर्थ सोच में न चलें (4:17)। खोए हुए लोग बिना आत्मिक निर्देशन के रह रहे हैं। मसीह का जीवन उद्देश्य से भरा था और यदि हम उसके नमूने का पालन करते हैं तो हम आशीषित होंगे (देखें 1 पतरस 2:21; 3:9)।

हम प्रेम में चलें (5:2)। परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4) और हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य अपने सारे मन, प्राण और हृदय से उससे प्रेम करना है। इसके अलावा हमें दूसरों से वैसे ही प्रेम रखना आवश्यक है, जैसे हम अपने आप से रखते हैं (देखें मत्ती 22:37-39)।

हम ज्योति की संतान की तरह चलें (5:8)। अब हमें ''अन्धकार'' में नहीं चलना है क्योंकि अब हम ''प्रभु में ज्योति'' हैं।

हम बुद्धिमानों की तरह चलें (5:15, 16)। हमें चाहिए कि जब अभी हम सेवा कर सकते हैं तो अपने दिन प्रभु की सेवा करते हुए बिताएं (देखें यूहन्ना 9:4)।

जे लॉकहर्ट

आत्मा से परिपूर्ण जीवन (5:18-21)

पुराने नियम में अपने लोगों के लिए परमेश्वर का एक मन्दिर था; नये नियम में अपने लोगों के लिए परमेश्वर का एक मन्दिर है। अपने नये जन्म (बपतिस्मे) के समय हर मसीही जीवते

परमेश्वर का मन्दिर बन जाता है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने कहा था, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। यदि हम ने नया जन्म पा लिया है तो हम में कोई है और वह परमेश्वर का पवित्र आत्मा है। यह ईश्वरीय प्रक्रिया केवल बपतिस्मे के समय आरम्भ होती है और इसके बाद मसीही व्यक्ति प्रतिदिन परमेश्वर के आत्मा के साथ रहता है।

पौलुस ने इफिसियों को ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने की सलाह दी (5:18)। यह विकल्प नहीं बल्कि आज्ञा है। आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ यह नहीं है कि यदि हम अति-आत्मिक बनना चाहें तो हम बन जाएंगे बल्कि नया जन्म पाए हुए परमेश्वर के हर बालक की यह ज़िम्मेदारी है। हमें आत्मा से परिपूर्ण होना *आवश्यक* है।

हमें कैसे पता चल सकता है कि हम इस ईश्वरीय दायित्व को पूरा कर रहे हैं? उन लोगों के क्या निशान होते हैं जो धीरे-धीरे आत्मा से परिपूर्ण हो रहे हैं? आयत 18 हमें आज्ञा देती है और अगली आयतें हमें तीन विशेषताएं बताती हैं कि जिनसे पता चलता है कि विश्वासी आत्मा से परिपूर्ण है। मूल यूनानी धर्मशास्त्र में उनका संकेत कृदंतों के रूप में अर्थात शब्दों के रूप में दिया गया है जो निरन्तर क्रिया का संकेत देते हैं।

आत्मा से परिपूर्ण जीवन की पहचान के तीन चिह्न कौन से हैं?

एक दूसरे को समझाते हुए ''बातें करना।'' ''और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो'' (5:19)।

हमारे गाने से प्रभु परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम का पता चलता है यानी यह समर्पण की अभिव्यक्ति है। यह आनन्दपूर्ण आराधना का भाग है। हमारा आनन्द परमेश्वर की महिमा में बाहर को आएगा। हमारे मन हमारे छुड़ाने वाले परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद के लिए पुकारना चाहेंगे।

पौलुस ने कहा कि यह ''बातें करना'' ''भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत'' गाकर होगा। हमें इन शब्दों के अन्तरों पर इतना ज़ोर नहीं देना चाहिए चाहे इन में थोड़ा बहुत अन्तर होना आवश्यक है। ''भजन'' पुराने नियम के भजनों को कहा गया है, जो कि आरम्भिक कलीसिया की एकमात्र गीत पुस्तक होती थी। परमेश्वर की महिमा उसकी प्रेरणा से दी गई महिमा की उसकी पुस्तक से करने की पौलुस की आज्ञा है। दुखी हों या आनन्दित, हमारा मूड चाहे जैसा भी हो, हम चाहें किसी समस्या में हों, हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भजन ढूंढ़ सकते हैं।

''स्तुतिगान'' परमेश्वर की महिमा के लिए गाए जाने वाले गीत हैं। स्तुतिगान विशेष रूप से मसीही उपज हैं, जो कि यहूदी धर्म से कलीसिया को मिले हैं।

''आत्मिक गीत'' शायद कम औपचारिक गीत हैं, जो हमारे विश्वासों, आनन्दों और धन्यवाद को व्यक्त करते हैं। ये उन स्तुतिगानों और भजनों से जो पीढ़ी से पीढ़ी चलते आ रहे हैं, कहीं अधिक व्यक्तिगत हैं।

हमें अपने मन से गाना और प्रभु के सामने दिलों के सुरों को लाना आवश्यक है। यूनानी शब्द के अनुवाद ''कीर्तन करते'' का वास्तविक अर्थ आराधना करते हुए दिल के तारों को छूना

है। परमेश्वर की सच्चे मन से महिमा के लिए दिल हमें दिया गया साज़ है। आराधना के लिए हमारा इरादा ''प्रभु के सामने'' शब्दों में दिखाई देता है। गाना अपने आप को ऊंचा करने या यह देखने के लिए नहीं है कि हम अपनी आवाज़ को किस कद्र सुन्दरता से मोड़ सकते हैं। भजनों, स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों में बातें करने का हमारा मुख्य लक्ष्य अपने छुड़ाने वाले को आदर देना और उसकी महिमा करना है।

आभार जताने के लिए परमेश्वर का ''धन्यवाद करना।'' ''और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो'' (5:20)।

जिस प्रकार से गाना यह दिखाता है कि परमेश्वर के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है वैसे ही धन्यवाद करना यह दिखाता है कि हम अपनी परिस्थितियों से कैसे निपटते हैं। जब हम आत्मा से परिपूर्ण होंगे तो हर बात में धन्यवाद देंगे।

यह किस प्रकार का धन्यवाद देना है ? यह सही दिशा में किया गया आभार है: ''परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते'' हुए। जहां कुछ लोग कहते हैं कि ''आज मेरी किस्मत अच्छी थी,'' वहां हम श्रेय परमेश्वर को देते हैं। हमें ''सदा धन्यवाद करते हुए'' धन्यवाद करना आवश्यक है।

पौलुस ने आगे कहा, ''... सब बातों के लिए।'' हम अपने जीनव में आने वाली अच्छी अच्छी बातों के लिए परमेश्वर को आसानी से धन्यवाद दे सकते हैं। जीवन की कठिनाइयों के लिए क्या कराना चाहिए। हो सकता है कि हमें समझ न आए कि वे क्यों आती है परन्तु फिर भी हम मान सकते हैं कि उनसे किस प्रकार भला हो सकता है।

भय में एक दूसरे के सामने झुकना। ''मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो'' (5:21; NIV)।

''अधीन होना'' में एक दूसरे के साथ हमारे सम्बन्धों पर पौलुस द्वारा लिखे जाने के समय इसका इस्तेमाल सैनिक शब्द के रूप में होता था। इसका अक्षरश: अर्थ था कि बराबर के पद का व्यक्ति अपने बराबर के दूसरे व्यक्ति के अधीन होता है। इसमें छोटेपन का कोई संकेत नहीं है। परमेश्वर पुत्र परमेश्वर पिता के अधीन हो गया। वह पूरी तरह से परमेश्वर पिता के बराबर था परन्तु स्वेच्छा से वह अधीन हो गया।

पत्नियों को अपने अपने पतियों के अधीन होना आवश्यक है, परन्तु यह केवल नियम का प्रदर्शन है। अधीन होने की बात केवल उन्हीं को नहीं बताई गई। अधीनता हर मसीही के लिए है। जितना हम विनम्रता से मसीह में अपने भाइयों और बहनों के अधीन होंगे उतना ही हमें आत्मा से परिपूर्ण किया जाएगा। कुछ भाई अपने मसीही जीवनों में पीछे हट जाते हैं क्योंकि वे अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे होते हैं। जब तक कोई अपने अधिकारों की मांग करता रहता है तब तक वह आत्मा के नियन्त्रण में नहीं आ सकता है। हम अपने आप से मर गए हैं (देखें गलातियों 2:20)। मरे हुए व्यक्ति को क्या अधिकार होता है ?

मसीही व्यक्ति अपने आपको किसी दूसरे मसीही के अधिकार के नीचे क्यों करे ? उसकी सेवा के लिए। कुछ लोग आत्मा से परिपूर्ण होने के इच्छुक होते हैं पर यीशु के नाम में किसी दूसरे की सहायता करने की परेशानी नहीं लेना चाहते। पौलुस ने कहा, ''क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:5)। हमें प्रेम से एक-दूसरे की सेवा

करनी आवश्यक है।

पौलुस ने कहा, ''मसीह के भय से एक-दूसरे के अधीन रहो'' (NIV)। हम यीशु के कारण एक दूसरे के अधीन होते हैं। उसने दूसरों की सेवा तो की ही उसके द्वारा नमूना भी ठहरा दिया। उसके आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए उसके जैसा बनना आवश्यक है।

सारांश। जब हम आत्मा से परिपूर्ण होते हैं तो संसार देखता है कि हम पर किसका प्रभुत्व है और हम किसके वश में हैं। हम उन्हें अपनी बातचीत, धन्यवाद देने और अधीन होने के द्वारा इसे दिखा सकते हैं।

हमारा धन्यवाद करना (5:20)

5:20 पढ़ते हुए हमें अपने धन्यवाद करने के लिए हर बात की अगुआई देखने को मिलती है:

दिशा में सही: ''... *परमेश्वर पिता का* धन्यवाद करते रहो।''

अवधि में निरन्तर: ''*सदा* धन्यवाद करते रहो।''

आयाम में सम्पूर्ण: ''... *सब बातों* के लिए।''

बढ़ाया गया विवाह (5:21-33)

इतने सारे विवाह परेशानी में क्यों हैं? विवाहित रहने वालों में दम्पत्तियों का एक चौंकाने वाला प्रतिशत अपने विवाह को ''खुशहाल'' क्यों नहीं मानता है? अपने जीवनों को बांटने के लिए पुरुषों और स्त्रियों के लिए परमेश्वर ने ऐसे तो योजना नहीं बनाई। वह हर विवाह में एक ऐसा वातावरण बनाना चाहता है जिसमें पति और पत्नी प्रसन्न हों और जहां तक हो सके बेहतरीन मसीही बन सकें।

5:21-33 में पौलुस ने कुछ बातें बताईं जिन से अपने साथी के साथ खुशहाल सम्बन्ध बनाने में हर किसी को सहायता मिल सकती है। पत्नी के सिर के रूप में पति के लिए परमेश्वर की योजना स्नेही अगुआ बनने की है; और पत्नी के लिए उसका ढंग वफादारी से उसके पीछे चलने का है।

पतियों के लिए परमेश्वर का सिर होना।

(1) पति सिर है (5:23)। पत्नी की अधीनता की बात करते हुए पौलुस ने पत्नी के पति के कब्जे में होने की कोई बात नहीं की। उसने यह कभी नहीं लिखा, ''हे पतियो, अपनी पत्नियों से आज्ञा मनवाओ! उन पर अधिकार रखो!'' पौलुस ने इससे दूर तक मेल खाती बात भी नहीं की।

पति के लिए पत्नी का सिर होने का क्या अर्थ है? उसे अगुआई करने वाला होना चाहिए। कोई भी पति जो परिवार में अपनी स्थिति को सही ढंग से नहीं समझता है मुश्किल में ही पड़ेगा। जो पति अधीनता में अपनी पत्नी को धमकाने की कोशिश करता है उसे यह जानने की आवश्यकता है कि मसीह ने किस प्रकार से अपनी पत्नी अर्थात कलीसिया को अधीनता में लाया। उसने कलीसिया से प्रेम करके और कलीसिया के लिए मरकर कलीसिया को अधीन किया न कि आदेश देकर। जो पति अपनी पत्नी के साथ विवाह को बढ़ाना चाहता है उसे मसीह के नमूने का पालन करना पड़ेगा।

घर में पति के अधिकार सड़क पर उसके अधिकारों से बहुत मेल खाते हैं। उदाहरण के लिए कई बार उसे गाड़ी चलाते हुए रास्ता नहीं मांगना चाहिए। चौराहे पर चाहे बत्ती यह संकेत दे रही हो कि अब चलने की बारी उसकी है पर साइड से एक बड़ा सा ट्रक आ जाए, जिसके रुकने का कोई संकेत न लग रहा हो तो वह अपने अधिकार का इस्तेमाल करने की मांग नहीं करेगा!

कई पति अपने अधिकारों के लिए डट जाने में गलत होते हैं। उनका मानना होता है कि उन्हें अधिकार है, वे मर्द हैं और उन्हें अपनी मर्ज़ी मनवाकर अपने अधिकार को लेना है। परिणाम यह होता है कि उनके विवाह टूट जाते हैं। घर में परमेश्वर द्वारा पति को दी गई स्थिति तानाशाह बनने की नहीं बल्कि प्रेमी अगुआ बनने की है।

(2) पति वैसे ही सिर है जैसे मसीह सिर है (5:23)। तानाशाह न होने पर पति अपने घर की अगुआई कैसे करेगा? ''जैसे मसीह'' कलीसिया की अगुआई करता है। छोटे से शब्द ''जैसे'' को नज़रअन्दाज़ न करें। कुंजी यही है। जो पति अपने घर का इंचार्ज है वह अपनी पति से ''अधीन'' होने को कहते हुए बाइबल को छड़ी की तरह इस्तेमाल न करे।

क्या यीशु ने अपनी पत्नी को कभी अधीन होने के लिए ज़बर्दस्ती की है? यदि उसने की होती तो कलीसिया निश्चय ही अलग होती। सच तो यह है कि कलीसिया के बहुत से लोग उसके अधीन नहीं हैं। यीशु अपनी दुल्हन की अगुआई कैसे करता है? वह उसके आगे मिन्नत करता है और उसके लिए मर गया; वह उससे प्रेम करता है। 5:24 के अनुसार जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है पत्नी के लिए उसी प्रकार से हर बात में अपने पति के अधीन होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब पति अपनी दुल्हन की अगुआई के लिए अपनी कलीसिया की अगुआई के यीशु के नमूने को मानता है।

(3) पति वैसे ही प्रेम करे जैसे मसीह ने किया (5:25)।

निस्वार्थ प्रेम। मसीह ने अपनी दुल्हन अर्थात कलीसिया से कैसे प्रेम किया? उसने उससे *निस्वार्थ होकर* प्रेम किया क्योंकि उसने उसके लिए अपने आपको दे दिया। मसीह ने पहले उस पर अपनी इच्छाएं और आवश्यकताएं नहीं थोपी। यदि थोपी होती तो वह महिमा की सुनहरी गलियों को कभी न छोड़ता। उसके बजाय यीशु ने पहल अपनी दुल्हन की आवश्यकताओं को दी। उसने अपने निस्वार्थ प्रेम को बेहतरीन ढंग से जताया जब उसने कहा, ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे'' (मरकुस 10:45)।

जब कोई पुरुष विवाह करता है तो वह अपनी आवश्यकताओं पर ध्यान देने के अधिकार को छोड़ देता है। उसका विवाह अपनी पत्नी से हुआ है और वह उसके साथ एक तन है। अब वह जैसे चाहे अपनी इच्छाओं के आधार पर फैसले नहीं ले सकता। मसीह ने अपने आपको कलीसिया के लिए दे दिया और पति के लिए अपने आपको अपनी पत्नी के लिए देना आवश्यक है। उसकी भलाई उसके हर फैसले का आधार होनी चाहिए। उसे उससे निस्वार्थ प्रेम करना आवश्यक है।

बलिदानपूर्वक प्रेम। पति के लिए अपनी पत्नी से *बलिदानपूर्वक* प्रेम करना आवश्यक है क्योंकि बाइबल बताती है कि मसीह कलीसिया के मर गया। ऐसा उसने सचमुच में, बिल्कुल और पूरी तरह से किया। पति अपनी पत्नी से वैसे प्रेम नहीं करता है जैसे यीशु ने अपनी दुल्हन

से किया जब तक वह उसके लिए ''मरा'' नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसे अपने आप से मरना आवश्यक है। उसे अपने तरीके पर ज़ोर देने से मरना चाहिए।

यीशु कलीसिया के लिए मरा ही नहीं, बल्कि कलीसिया के कलीसिया बनने से पहले सदस्यों के लिए अपने आप से मरना और मसीह के लिए जीवित होना आवश्यक था। बहुत से घरों में क्या आवश्यकता है? उन्हें दो जनाज़ों और एक निकाह की आवश्यकता है! पत्नी अपने आप से मर जाती है; पति अपने आप से मर जाता है। पति बलिदानपूर्वक ढंग से अपनी पत्नी से प्रेम करने को तैयार है। वह कहता है, ''अपनी पत्नी के लिए छोड़ देने के लिए मेरे लिए कोई भी चीज़ इतनी कीमती नहीं है!''

पवित्र करने वाला प्रेम। और भी बहुत कुछ। यीशु ने अपनी दुल्हनें से *पवित्र करने वाले* प्रेम के साथ प्रेम किया। ''... उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस मे न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो'' (5:26, 27)।

मसीह क्या करने के लिए काम कर रहा है? अपनी दुल्हन को पवित्र करने और सुन्दर बनाने। आत्मा से परिपूर्ण पति का जो स्नेही अगुआ बनना चाहता है क्या काम करना चाहता है? अपनी पत्नी को अत्यधिक सुन्दर व्यक्ति बनाना।

पति के लिए अपनी पत्नी की अगुवाई करते हुए उसे सिखाते हए और आत्मिक रूप से उसे पवित्र बनाना है। वह उसे कभी भी ऐसी स्थिति में नहीं डालेगा जिससे वह बहस करने के लिए उकसाई जाए या क्रोधित होकर बात करे। वह उसे दूषित करने के लिए कुछ नहीं करेगा। वह उसे किसी भी ऐसी बात चीज़ में नहीं कहेगा कि जससे उसके जीवन में अशुद्धता आ जाए। वह अपनी पत्नी से पवित्र करने वाले प्रेम के साथ प्यार करता है।

संतुष्ट करने वाला प्रेम। उसे अपनी पत्नी से *संतुष्ट करने वाले* प्रेम से भी प्रेम करना आवश्यक है: ''इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता हे, वह अपने आप से प्रेम रखता है'' (5:28)।

आदमी अपनी देह के साथ क्या करता है। वह इसे संतुष्ट करने की कोशिश करता है। जब यह प्यासी हो तो पानी पीता है। जब उसकी देह को भूख लगी हो तो वह इसे खाना खिलाता है। जब इसे चोट लगी हो तो वह इसे मरहम पट्टी करता है। पति अपनी पत्नी से ऐसी ही प्रेम करता है। वह उसकी आवयकताओं को जान लेता और फिर उन आवश्यकताओं पूरा करके उसे संतुष्ट करता है। बहुत कम पत्नियां होंगी जो ऐसा करने वाले पति के अधीन होकर उसका विद्रोह करेंगी, जिसका पूरा विवाह अपनी पत्नी की आवश्यकता को पूरा करने पर टिका है।

कुछ विवाहों में समस्या यह है कि पति अपनी पत्नी को अपनी ही देह के विस्तार के रूप में नहीं बल्कि एक सम्पत्ति के रूप में देखता है। जब उसका सामान पुराना हो जाता है वह कुछ नया लाना चाहता है। इसके विपरीत मसीही पति अपनी पत्नी के साथ बूढ़ा होता है, वह उसकी पड़ रही भीतरी सुन्दरता को देखता है और उससे पहले से भी अधिक प्रेम करता और उसकी परवाह करता है। अपनी पत्नी की आवश्यकताओं को पूरा न करने वाला पति आत्मिक आत्महत्या करता है क्योंकि वह उसके साथ एक तन है।

एक श्रेष्ठ प्रेम। अन्त में विवाह में पुरुष को अपनी पत्नी से *श्रेष्ठता से* प्रेम करना चाहिए:

''इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे'' (5:31)।

आदमी का विवाह अन्य सभी सांसारिक सम्बन्धों से पहले आना चाहिए। पति और उसकी पत्नी के बीच सम्बन्ध की तुलना पौलुस ने मसीह और कलीसिया से की है जो आत्मिक सम्बन्धों में सबसे ऊपर है। सबसे बड़ा मानवीय सम्बन्ध माता और उसके बच्चे के बीच नहीं बल्कि पति और उसकी पत्नी के बीच का है।

पत्नियों के लिए परमेश्वर का ढंग।

(1) आवश्यकता: ''हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे *अधीन रहो, ...*'' (5:22)। ''अधीन रहो'' का अर्थ अपने आपको स्वेच्छा से किसी दूसरे के अधिकार में कर देना है। यदि पत्नी सांसारिक सोच वाली है तो वह अपने पति के अधीन होने के इस नियम का विरोध करेगी। जितना वह संसार की तरह सोचेगी उतना ही अधीन होने से इनकार करेगी।

आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति उन लोगों के अधीन होने को तैयार होता है जिन्हें परमेश्वर ने अधिकार का पद दिया है। आयत 21 कहती है, ''मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।'' अधीनता केवल स्त्रियों के लिए नहीं बल्कि हर मसीही के लिए है। बाइबल कहती है कि घर में पत्नी अपने पति के अधीन रहे।

शेक्सपीयर ने लिखा था, ''यदि जो जन घोड़े पर सवार हों तो एक को पीछे बैठना ही पड़ता है।''[38] इससे घुड़सवार छोटा नहीं हो जाता बल्कि यह तो व्यावहारिक आवश्यकता है। इसी प्रकार से घर में यह असमानता या छोटे होने की बात नहीं बल्कि व्यवहारिक आवश्यकता है। पर परमेश्वर ने ठहराया है कि पत्नी ''पीछे बैठे।''

पत्नियां यदि केवल बाहरी रूप में अधीन होती हैं तो वे अपने पतियों के अधीन नहीं हैं। बाइबल के अनुसार अधीनता के लिए बाहरी रूप और भीतरी व्यवहार दोनों शामिल हैं। परमेश्वर की शर्त को यही बात पूरा करती है।

(2) कारण: ''क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है'' (5:23)। परमेश्वर ने पत्नी के लिए अपने घर में ऐसी शर्त क्यों ठहराई? पत्नी के अधीन होने का कारण यह है कि परमेश्वर ने पति को पत्नी का सिर होने के लिए चुना है (देखें उत्पत्ति 3:16)। यह दण्ड देने के लिए नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य है। अपनी बड़ी समझ में परमेश्वर को मालूम था कि किसी प्रकार के क्रम के बिना चाहे वह समाज में हो, सरकार में या घर में, बहुत जल्द उथल पुथल मच जाएगी। दो मालिकों वाला घर अपने ही विरोध में होकर बंट जाएगा, जिससे अन्त में वह बर्बाद हो जाएगा। परमेश्वर ने पति को घर का सिर होने के लिए चुना। पौलुस ने लिखा है, ''सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है: और स्त्री का सिर पुरुष है: और मसीह का सिर परमेश्वर है'' (1 कुरिन्थियों 11:3)। यह परमेश्वर की ''आज्ञा की कड़ी'' है।

परमेश्वर पुत्र परमेश्वर पिता के साथ तुल्य है। फिलिप्पियों 2:5-7 कहता है, ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, ... और मनुष्य की समानता में हो गया।'' परमेश्वर का पुत्र स्वेच्छा से परमेश्वर

पिता के अधीन हो गया, किसी असमानता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि मनुष्यजाति के सफल छुटकारे के लिए परमेश्वर की आज्ञा की कड़ी में यह आवश्यक था।

जो पत्नी अपने पति के अधीन नहीं होती उसे जीवन में बहुत सी समस्याएं आएंगी। पहले तो उसे परमेश्वर के साथ गम्भीर समस्या होगी। जब कोई पत्नी अपने पति की अगुआई को मानने से इनकार करती है तो उसकी वास्तविक समस्या उसके पति से नहीं है। यह समस्या परमेश्वर से है जिसने उसे अधीन होने को कहा है। इसलिए उसे आत्मिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, जैसे प्रार्थना के जीवन में समस्याएं, बाइबल अध्ययन में समस्याएं और परमेश्वर पिता के साथ अपने आपको जोड़ने में समस्या।

अधीन न होने वाली पत्नी को अपने *पति* के साथ भी कठिनाइयां होंगी। जब कोई पत्नी अपने पति के अधिकार का सम्मान करने से इनकार करती है तो वह उसे पूर्ण करने वाली न होकर उसे अपंग बनाने वाली हो जाती है। वह घर में अगुवे की परमेश्वर की दी हुई अपनी भूमिका को निभाने की अपने पति की इच्छा को पूरा करने में रुकावट बनती है। यदि वह न माने तो पति अगुआई नहीं कर सकता।

उसके *बच्चे* भी उसे परेशानियां देंगे। जो पत्नी अपने पति के सिर होने को मानने से इनकार करती है उसे अपने बच्चों से कभी उचित सम्मान नहीं मिलेगा। बाइबल बताती है कि बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा मानें, परन्तु वे किस प्रकार के माता की आज्ञा मानें? बच्चे आत्मा से परिपूर्ण माता की आज्ञा मानें जो आत्मा से परिपूर्ण अपने पति के अधीन है। यदि माता विद्रोही है और बुरी तरह से स्वतन्त्र है तो उसके बच्चे देखेंगे और सम्भवतया उसके साथ वैसा ही करेंगे। वह उन से वह करने को नहीं कह सकती जो उसने स्वयं नहीं किया है।

ऐसी पत्नी को *अपने* साथ भी मुश्किलें आएंगी। उसे पता चलेगा कि वह परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी भूमिका का विद्रोह कर रही है। इस तथ्य की जानकारी साये की तरह उसका पीछा करती रहेगी। इसके अलावा पत्नी की कुछ आवश्यकताएं होती हैं, जो पूरी तरह से तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक वह अपने पति की अगुआई की अधीनता में होकर उन्हें पूरा करने के लिए उसे छूट नहीं देती।

(3) परिणाम: ''पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के आधीन रहें'' (5:24)। बहुत सी स्त्रियां पौलुस के इन निर्देशों पर गुस्सा करती हैं। ऐसा व्यवहार करने वाले व्यक्ति में जीवन के बड़े सिद्धांत को नज़रअन्दाज़ कर दिया है कि अधीन होना किसी की आज़ादी को छीन नहीं लेता बल्कि यह वास्तविक आज़ादी देता है। यदि पति अविश्वासी हो या खुलेआम परमेश्वर की शिक्षाओं को न मानता हो? क्या ''हर बात में'' अधीन होना में यह बात भी है? एक सरल सा नियम है कि पत्नी हर बात में *तभी* अधीन हो जब यह परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन न करती हो। आज्ञा पति के नियमों से उसकी सहमति पर निर्भर होना नहीं है; यह केवल उसी बात में अधीन होने की बात नहीं है कि यदि जो कुछ वह उसे करने को कहता हो वह उसे पसन्द है। अपने पति के अधीन होने की जिम्मेदारी से छूट उसे केवल इस नियम में मिलती है कि यदि वह उसे कोई ऐसा काम करने को कहे जो परमेश्वर के पवित्र मानक के उलट हो।

पौलुस ने अपने समय के धार्मिक अगुओं से जो उससे यीशु का प्रचार बन्द करवाना चाहते

थे, कहा था कि ''तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें। क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें'' (प्रेरितों 4:19, 20)। जब मानवीय अधिकारी की आज्ञा मानने से परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में टकराव आता है तो मसीही व्यक्ति को पहले परमेश्वर के अधिकार का सम्मान करना आवश्यक है।

पौलुस ने मसीही पत्नी को अपने गैर मसीही पति की अगुआई को मानने का निर्देश दिया (1 पतरस 3:1, 2)। परन्तु पतरस ने ''हर बात में'' वाक्यांश नहीं जोड़ा। उसने यह जानते हुए कि गैर मसीही पति उसे ऐसे काम करने को कह सकता है, जिन्हें मानने के लिए वह सहमत नहीं होगी, इसे निकाल दिया।

5:24 में जब पौलुस ने कहा कि पत्नियां ''हर बात में'' अपने पतियों के अधीन हों, तो संदर्भ स्पष्ट है। वह आत्मा से परिपूर्ण पत्नी को बता रहा था कि आत्मा से परिपूर्ण अपने पति से उसका सम्बन्ध कैसा होना चाहिए। ऐसा पति अपनी पत्नी को किसी ऐसी बात में अगुआई नहीं करेगा जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हो। इसलिए आत्मा से परिपूर्ण पत्नी ''हर बात में'' अपने पति के अधीन हो सकती है और उसे होना चाहिए। अपने पति को पूर्ण करने वाली के रूप में केवल ऐसा करते हुए उसे सच्ची खुशी और सुरक्षा मिल सकती है।

सारांश। अपनी पत्नी के लिए पति का प्रेम वैकल्पिक नहीं है। यदि पति अपनी पत्नी से सच्चाई से वैसे ही प्रेम करे जैसे यीशु अपनी कलीसिया से प्रेम करता है तो उसे अपनी पत्नी के साथ एक नया और ताज़ा भावनात्मक सम्बन्ध मिलेगा। फिर यदि वह उसके अधीन होने की इच्छा करे तो दोनों को परमेश्वर की योजना के अनुसार विवाह को बढ़ाने का अवसर मिलेगा।

क्रिस बुलर्ड

पति की भूमिका (5:23-31)

5:23-31 के अनुसार पति इन तीन प्रकार से अपनी पत्नियों के लिए उचित सम्मान और आदर दिखाते हैं:

वे अपनी पत्नियों के लिए आत्मिक नेतृत्व दें (5:23)। इस तथ्य का कि पति अपनी पत्नियों ''का सिर'' हैं अर्थ यह है कि वे अगुवे हैं और उन्हें आत्मिक अगुआई करने की अपनी भूमिका को मानना पड़ेगा।

''जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिए दे दिया'' *वे* आत्म बलिदान करने वाले स्नेह के साथ *अपनी पत्नियों से प्रेम करें* (5:25)। वे अपनी आवश्यकताओं के बजाय अपनी पत्नियों की आवश्यकताओं पर अधिक ध्यान दें।

यह प्रेम ऊंचा उठाने वाला प्रेम है (5:26, 27)। पतियों को अपनी पत्नियों को प्रोत्साहित और उत्साहित करना आवश्यक है। जिस प्रकार से मसीह के प्रेम के कारण कलीसिया के लोग बढ़ते जाते हैं वैसे ही पत्नियां बेहतर इनसान बनती हैं जो कि वे अपने पतियों के बिना नहीं बन सकतीं।

यह प्रेम पालन पोषण करने वाला प्रेम है (5:28-30)। ''पोषण'' शब्द महत्व और स्नेहपूर्ण भावनाओं की बात करता है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:7)। ''पालन'' शब्द वाटिका को बड़ा

करने के लिए की गई देखभाल की बात है। जिस प्रकार से एक माली पौधा लगाता, उसे खाद डालता और अपनी वाटिका में पानी देता है वैसे ही पतियों के लिए अपनी पत्नियों की भलाई को करना आवश्यक है। जब पति अपनी पत्नियों का पालन पोषण करेंगे तो वे उन्हें समझने और उनका आदर करने की इच्छा करेंगे (देखें 1 पतरस 3:7)। उन्हें उनका महत्व दिखाने के तरीके ढूंढ़ने चाहिए।

वे अपनी पत्नियों के वफ़ादार हों (5:31)। पति और पत्नियां ''एक तन'' हो गए हैं। एक दूसरे से उनकी वफ़ादारी जब तक वे जीवित हैं तब तक रहनी चाहिए

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]स्पायरस ज़ोडिएट्स, सम्पा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1991), 869. [2]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 126. [3]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कॉर्डैंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: समुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 154. [4]वुएस्ट, 126. [5]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम्म, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. व संपा. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 220. [6]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 982. [7]वुएस्ट, 127. [8]ज़ोडिएट्स, 948. [9]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 346. [10]जोसेफ़स *एंटिक्विटीस* 7.12.3.

[11]बुलिंगर, 761. [12]वुएस्ट, 227. [13]एम. सी. कुर्फीस, *इंस्ट्रूमेंटल म्यूज़िक इन द वरशिप* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1950), 16. ओवन डी. ऑल्ब्रट, ह्यूगो मेकोर्ड और जैक पी. लुईस द्वारा लिखित गाने के अध्ययनों में ''वर्शिप'' *ट्रुथ फ़ार टुडे* (मार्च 2003): 27-31 और ''द क्वेश्चन ऑफ़ इंस्ट्रूमेंटल म्यूज़िक,'' *ट्रुथ फ़ार टुडे* (मार्च 2008) शामिल हैं। [14]कुर्फीस, 48. [15]ज़ोडिएट्स, 964. [16]वुएस्ट, 129. [17]लिंकोन, 365. [18]वुएस्ट, 130. [19]ज़ोडिएट्स, 942. [20]लिंकोन, 368.

[21]वही, 372. [22]वही, 373. [23]वुएस्ट, 131. [24]वही, 132. [25]ज़ोडिएट्स, 928. [26]लिंकोन, 377. [27]वही। [28]ज़ोडिएट्स, 942. [29]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:370-71 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [30]बुलिंगर, 537.

[31]वही, 146. [32]वही, 279. [33]जे. ए. रॉबिन्सन, *सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द इफिसियंस,* 2रा संस्क. (लंदन: मैक्मिलन एंड कं., 1904), 127. [34]लिंकोन, 385. [35]एलेक्जेंडर कैम्पबेल, *द क्रिश्चियन सिस्टम* (सेंट लुईस: क्रिश्चियन पब्लिशिंग कं., 1835), 231. [36]यूसब्युस पैम्पफिलुस *द लाइफ ऑफ द ब्लैसड एम्परर कॉन्स्टेंटाइन* 4.62. [37]कैम्पबेल, 232. [38]विलियम शेक्सपीयर *मच अडो अबाउट नथिंग* 3.5.